International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 4 || April 2025 || PP. 94-98

उर्दू भाषा में गीता (अनवर जलालपुरी द्वारा अनूदित गीता का आलोचनात्मक अध्ययन)

डा० अली ज़फर

प्रवक्ता, राजकीय इन्टर कॉलेज, लैलखुर्द, महमूदाबाद सीतापुर

गीता एक बहुत महानतम रचना है और इसकी महानता और महत्ता को भारत ने सबसे अधिक स्वीकार किया है। तथा भारतीय भाषाओँ ने इसे हाथों हाथ लिया है, और इस महानतम रचना के सबसे ज़्यादा अनुवाद हिन्दी भाषा में मिलते हैं और हिन्दी के बाद जिस भाषा में गीता का सबसे अधिक अनुवाद हुआ हैं वह उर्दू भाषा है। उर्दू भाषा में गीता के लग भग 96 अनुवाद हुए हैं। गीता के उर्दू अनुवादों के हवाले से बहुत से अदीबों के शोध और रचनायें मिलतीं हैं। जिनमें से राम लाल नभवी, गोपी चंद नारंग, प्रो शरीब रुदौलवी के अलवा बहुत से अदीब हैं जो वक्त वक्त पर गीता के अनुवाद के हवाले से लिखते रहे हैं उनमें से सुल्तान अहमद सिद्दीकी अहम् हैं, सुलतान अहमद सिद्दीक़ी को उर्दू के पचास अनुवादित गीता का पता चला है। प्रो0 गोपी चन्द नारंग से पता चलता है कि उर्दू में गीता के काव्यात्मत (मंजूम) अनुवादों की संख्या 31 और गद्यात्मत अनुवादों की संखया 47 है। इस तरह ऊर्द में काव्यात्मक अनुवाद और गद्यात्मक अनुवादों की कुल संखया 98 है। मुन्शी नवल किशोर कन्हैय्या लाल उर्फ़ अलखधारी ने गीता का अनुवाद "ज्ञान प्रकाश" के शीर्षक से 1843 में ज्ञानी प्रकाशन आगरा से प्रकाशित किया था। इसी तरह मुन्शी सुन्दर लाल ने 1884 में एक किताब "भागवत गीता" में उर्दू अनुवाद के शीर्षक से प्रकाशित की। इस किताब में पहले संस्कृत में श्लोक अंकित हैं फिर अनुवाद और लेखनी और उसकी कुन्जी उर्दू में प्रस्तुत किया गया है। "भागवत गीता" ही के शीर्षक से मुन्शी देवी प्रसाद ने गीता का आसान उर्दू में अनुवाद किया जो 1913 में राम प्रेस मेरठ से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की एक विशेषता ये है कि अनुवाद से पहले हर अध्याय का सार सारांश भी अनुवादक ने प्रस्तत किया है।

गीता के उर्दू अनुवाद और अनुवादकों की सूचि इतनी ज्यादा है कि यहाँ सब का अध्ययन संभव नही है, मेरे शोधपत्र का शीर्षक "उर्दू भाषा में गीता" (अनवर जलालपुरी द्वारा अनूदित गीता का आलोचनात्मक अध्ययन) है ।

उर्दू शायरी में गीता के नाम से अनवर जलालपुरी ने गीता का उर्दू अनुवाद किया जो 2016 में आखर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ। अनुवादक ने पुस्तक की शुरुआत में कुछ महान विभूतियों के लेख भी सम्मिलित कर दिया है जिससे अनुवादक और अनुवाद के बारे में अच्छी जानकारियां प्राप्त होती हैं और सभी अध्यायों के प्रारम्भ में उसका सारांश भी प्रस्तुत किया गया है। जिससे पाठकों को अर्थ समझने में कोई दिक्कत नही होती है ।

हमारे भारतीय समाज में धार्मिक पुस्तकों की अहमियत बहुत अधिक है । तथा धार्मिक पुस्तकों में पुराणों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है, और पुराणों में सबसे बड़ा महाकव्य महाभारत है जो संस्कृत भाषा में लिखा गया है। धार्मिक ग्रन्थों में इसका महत्व बहुत ज्यादा है । महाभारत काव्यात्मक रचनाओं में से एक है । पवित्र गीता इसी महत्वपूर्ण कृति का एक महत्वपूर्ण भाग है । इसकी महत्वता और पवित्रता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता कि न्यायालयों में इसी पवित्र ग्रन्थ पर हाथ रख के गवाही ली जाती है ।

श्रीमद् भागवत गीता जिसे महर्षि वेदव्यास ने पांच हजार साल पहले काव्यात्मक रचित किया था । यह अठ्ठारह अध्यायों और सात सौ श्लोकों पर आधारित एक दार्शनिक और अध्यात्मिक काव्य रचना है । महाभारत युद्ध आरम्भ होने के ठीक पहले भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था वह श्रीमद् भागवत गीता के नाम से प्रसिद्ध है । यह महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है । गीता की गणना प्रस्थानत्रयी में की जाती है, जिसमें उपनिषद और ब्रह्मसूत्र भी सम्मिलित हैं । अतएव भारतीय परम्परा के अनुसार गीता का स्थान वही है जो उपनिषद और धर्मसूत्रों का है । महाभारत के युद्ध के समय जब अर्जुन युद्ध करने से मना करते हैं तब श्री कृष्ण उन्हें उपदेश देते हैं और कर्म व धर्म के सच्चे ज्ञान से अवगत कराते हैं । श्री कृष्ण के इन्ही उपदेशों श्रीमद भागवत गीता नामक ग्रन्थ में संकलित किया गया है । यदि हम थोड़ा विस्तार में बात करें तो गीता में सबसे ज्यादा 574 श्लोक श्री कृष्ण द्वारा कहें गये हैं इसके अलावा अर्जुन ने 84 श्लोक, संजय ने 41 श्लोक और धृतराष्ट्र ने सिर्फ एक श्लोक कहा था । श्रीमद् भागवत गीता श्री कृष्ण जी का वह उपदेश है जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के मैदान में महाभारत की जंग में अर्जुन को दिया था। भारतीय इतिहास में यह युद्ध अपनी मिसाल आप ही है जो कौरवों और पांडवों के बीच अट्ठारह दिनों तक लड़ा गया था ।

इसकी सबसे मुख्य विशेषता ये है कि इस में संकीर्ण मानसिकता के साथ साथ किसी भी धार्मिक मन्यता (विश्वास) अक़ीदा की तरफ़ दारी नहीं की गई है । बल्कि सैद्धान्तिक और दार्शनिक परिचर्चा है जिस में अपील हो सकती है और इस का सारांश ये है मोक्ष का सम्बन्ध कर्म से है । इसका सन्देश सारी दुनिया के लिए एक सा है। इस के बताए हुए रास्ते पर चल कर पूरी मानव जाति को आध्यात्मिक संतुष्टि और मोक्ष का रास्ता मिलता है। पूरे भारत में भारतीय संस्कृति में गीता इस तरह रची बसी है कि लगभग हर महफ़िल में लोग अपनी बात को सिद्व करने के लिए गीता के एक दो श्लोक तो सुना ही देते हैं। यही महत्वपूर्ण कारण है कि गीता का अनुवाद दुनिया की अधिकाधिक भाषाओँ में किया गया है। अबू रेहान अल बैरूनी वह पहला अरबी विद्वान है जिसने गीता का संक्षेप विवरण और इसके लम्बे लम्बे अंशों का अरबी अनुवाद अपनी किताब "किताब अल हिन्द" में प्रस्तुत किया है। बादशाह अकबर के राज में "अल्लामा फ़ैज़ी" ने फ़ारसी भाषा में इस का काव्यात्मक (मंजूम) अनुवाद किया था । यह अनुवाद वास्तव में हर अध्याय के श्लोकों का अनुवाद है।

उर्दू साहित्य में जिन धार्मिक ग्रंथों पर सबसे ज्यादा लिखा गया उनमें रामायण के बाद दूसरा नाम श्रीमद् भागवत गीता का आता है। श्रीमद भागवत गीता को बहुत से साहित्यकारों ने उर्दू में अनुवाद किया है । गीता के उर्दू शायरी में भी कुछ अनुवाद हुए हैं जिनमें ख्वाजा दिल मोहम्मद का तर्जुमा सबसे ज्यादा अहमियत रखता है । मगर जो प्रसिद्धि अनवर जलालपुरी की किताब "उर्दू शायरी में गीता" को मिली वह किसी और के हिस्से में नही आयी । इस अनुवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अनवर जलालपुरी का अनुवाद भावांतरण अनुवाद है। श्रीमद् भागवत गीता के श्लोकों से जो भाव उत्पन्न होता है उसी भाव को कविता के रूप में प्रस्तुत कर दिया गया है । इसकी भाषा शैली बहुत ही सरल और सादा है जो हर पढ़े लिखे तथा कम पढ़े लिखे व्यक्ति को भी परभावित करती है।

अनुवादक अनवर जलालपुरी की "उर्दू शायरी में गीता" ऊर्दू पद्य में अनुवादित है। ये पुस्तक 305 पृष्ठों पर आधारित है और 2016 में आखर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई है। इसके प्रारम्भिक हिस्से में कुछ विभक्तियों के बहुमूल्य विचार निबन्ध के रूप में अंकित हैं । ये निबन्ध संक्षिप्त है लेकिन उनको पढ़ने के बाद गीता और अनुवादक को पूरी तरह समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी। इस हिस्से में महाभारत गीता कौरवों और पाण्डवों आदि की संक्षिप्त जानकारी और घटनाएं और कुछ बहुत महत्वपूर्ण घटनाएं और जानकारी के ऐसे जानकारीपूर्ण निबन्ध है जो भगवत गीता को समझने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अनवर जलालपुरी उर्दू साहित्य के मैदान में अपनी अलग पहचान रखते हैं । जहाँ वह राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मुशायरों व कवि सम्मेलनों के शानदार संचालन के लिए जाने जाते हैं उससे कहीं ज्यादा एक प्रख्यात कवि और दानिश्वर के रूप में जाने जाते हैं जिनकी कविताओं में इस देश की गंगा जमुनी तहजीब रची बसी है ।

अनवर जलालपुरी ने श्रीमद् भागवत गीता के 701 श्लोकों को 1761 शेरों (पंक्ति) में अनुवाद करके जहाँ एक ओर सेक्युलर रिवायत को मजबूत किया है वहीँ असहिष्णुता और संकीर्ण मानसिकता के मौजूदा दौर में कौमी एकता की शानदार मिसाल प्रस्तुत की है । गीता का यह नायाब काव्यात्मक अनुवाद दो धर्मों के बीच सार्थक संवाद की परम्परा को जारी रखने की आवश्यकता को रेखांकित करता है ।

गीता का पहला श्लोक जो धृतराष्ट्र द्वारा कहा गया है :

(संस्कृत श्लोक) धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र समवेता युयुत्सव
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सजज्या ।

(धृतराष्ट्र ने कहा कि हे संजय : धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे तथा पांडु के पुत्र ने क्या किया ?)

अनवर जलालपुरी इस श्लोक को उर्दू भाषा में 9 शेरों (पंक्तियों) के माध्यम से यूँ अनुवाद करते हैं :

1. धृतराष्ट्र आंखों से महरूम थे मगर यह न समझो कि मासूम थे
2. उन्हें भी थी ख्वाहिश कि दुनिया है क्या अँधेरा है क्या और उजाला है क्या
3. वह एक शख्स संजय पड़ा जिसका नाम वही उनसे आखिर हुआ हम कलाम
4. उसे रब ने ऐसी नज़र बख्श दी कि बिन देखे हर एक शय देख ली
5. धृतराष्ट्र राजा भी थे बाप भी समझते थे वह पुण्य भी पाप भी
6. मोहब्बत से बेटों की सरशार थे अजब तरह के वह भी किरदार थे
7. उन्हें थी यह ख्वाहिश कि सब जान लें सभी लड़ने वालों को पहचान लें
8. कहानी तो संजय सुनाता रहा है मैदान में क्या बताता रहा
9. वह मैदां जो था जंग ही के लिए वहीँ से जले धर्म के भी दिये

(सन्दर्भ : अनवर जलालपुरी, उर्दू शायरी में गीता, पहला बाब (प्रथम अध्याय) पृष्ठ स०45,46)

इस काव्यानुवाद से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उनका भाषा पर गज़ब का नियंत्रण है। उनकी भाषा की रवानी गीता के श्लोकों के अर्थ की परत दर परत खोलती चली जाती है । वह एक श्लोक को कई कई अशआर (पंक्ति) में स्पष्ट करते हैं ताकि पाठक को श्लोक का अर्थ समझने में कोई दिक्कत न हो । अनवर जलालपुरी का गीता का यह सरल काव्यानुवाद सभी धर्मों के मानने वालों को गीता का सार समझने और बहुत सारी भ्रान्तियों को दूर करने में सहायक सिद्ध हो रहा है ।

यद्पि गीता के अनुवाद में उन्हें एक-एक श्लोक का अनुवाद करने के लिए पांच-पांच, छः-छः पंक्तियाँ लिखनी पड़ी हैं फिर भी वो इतना बोधगम्य सहज और सरल है जो हृदय में तुरंत उतर जाता है । विषय वस्तु को समझना और वो भी दुसरे धर्म के लोगों के लिए बहुत मुश्किल होता है मगर अनवर जलालपुरी ने हर अध्याय के प्रारम्भ में उस अध्याय की विषयवस्तु का सार संक्षेप में बताकर मुश्किल को और भी आसान कर दिया ।

प्रथम अध्याय तृतीय श्लोक

(संस्कृत श्लोक) पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ 3॥

("हे आचार्य! पांडु पुत्रों की विशाल सेना को देखिए, जिसे आपके बुद्धिमान शिष्य द्रुपद पुत्र ने व्यूहरचना की है।)

अनवर जलालपुरी उर्दू भाषा में इस श्लोक को चार शेर (पंक्ति) के माध्यम से कितनी सरलता से कह जाते हैं :

1. गये और गुरु जी से जाकर कहा कि पाण्डव के बेटों का यह हौसला
2. है सालार द्रुपद का बेटा वहां उसी का तो चलता है सिक्का वहां
3. हुनर आप ही ने सिखाया उसे सजाया, संवारा, बनाया उसे
4. वह शागिर्द होकर भी उस्ताद है उसे हर सबक़ आपका याद है

(सन्दर्भ : अनवर जलालपुरी, उर्दू शायरी में गीता, पहला बाब (प्रथम अध्याय) पृष्ठ स०47)

अनवर जलालपुरी के भावात्मक अनुवाद की खास बात यह है की उन्होंने शब्दर्थिक अनुवाद नहीं किया लेकिन उन्होंने कोई नई बात अपनी तरफ से अनुवाद में जोड़ी नहीं गयी है । फिर भी इस की मोसीक़ियत में कोई फर्क़ नहीं पड़ता है। यही इस अनुवाद की विशेषता है।

मैंने पुस्तक का अध्ययन करते समय पुस्तक में सम्मिलित सभी महानुभावों के विचारों को ध्यान से पढ़ा है और अनुवाद भी जगह जगह से देखा है और महसूस किया है कि जो कामयाबी उन्होंने अनुवाद करने और गीता के श्लोकों के सार को ऊर्दू भाषा में अनुदित करने में हासिल की है वह हैरतअंगेज़ है।

तीसरे अध्याय के तृतीय श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण जी अर्जुन के सवालों का जवाब देते हुए दो प्रकार की निष्ठाओं का उल्लेख करते हैं, जो ज्ञानयोग और कर्मयोग हैं।

(संस्कृत श्लोक) अस्मिन् लोके द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मया अनघ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानाम् कर्मयोगेन योगिनाम्।।

("हे निष्पाप! इस लोक में दो प्रकार की निष्ठाएँ पहले मेरे द्वारा बताई गई हैं। उनमें से ज्ञानियों की निष्ठा ज्ञानयोग से और योगियों की निष्ठा कर्मयोग से होती है।")

अनवर जलालपुरी इस भाव को कुछ यूँ अनुवाद करते हैं :

1. कहा सुन यह अर्जुन मेरा फलसफा न होगा गलत जो है मेरा कहा
2. हैं दुनिया में जीने के दो रास्ते हैं जलते उन्हीं रास्तों पर दिये
3. कि ज्ञानी चले मार्फ़त ही की राह जो योगी है ले वह अमल में पनाह
4. अमल से जो दुनिया में है बेखबर नहीं कर्म पर जिसकी कोई नज़र
5. समझ ले वह आज़ाद इन्सां नहीं किसी हाल में भी वह शादां नहीं

(सन्दर्भ : अनवर जलालपुरी, उर्दू शायरी में गीता, पहला बाब (प्रथम अध्याय) पृष्ठ स०96)

इस श्लोक को हर मजहब हर समाज हर मुल्क में समझा पढ़ा और अपनी ज़िन्दगी में आज़माया गया है। इस श्लोक में श्री कृष्ण ने कहा है कि कर्म करो फल की चंता मत करो। फल की इच्छा रखते हुए भी कोई काम मत करो। जब इच्छित फल की हमें प्राप्ति नहीं होती है तो हमें दुख होता है। अतः सुखी रहना तो सिर्फ कर्म करो और वह भी निष्काम भाव से। पहले अध्याय से लेकर अटठारहवें अध्याय तक प्रत्येक श्लोक का पद्य में अनुवाद है जो आसान ऊर्दू में बहुत मीठी सुन्दर और आम फहम और नगमगी से भरी हुई है। अनुवाद उस सुन्दरता से किया गया है कि उसका फ्लो नदी के बहाव जैसा है और उसे पढ़ते वक्त पाठक और दर्शक दोनों झूम उठते हैं।

"उर्दू शायरी में गीता" अनवर जलालपुरी का ऊर्दू भाषा में भावांतरण अनुवाद है । ये गीता के श्लोकों का लफ़्ज ब लफ़्ज अनुवाद नहीं है बल्कि श्लोकों के भावार्थ को काव्यात्मक रूप से समाया गया है। इस बात को हम उक्त पंक्तियों में साफ

साफ देख सकते हैं। गीता के श्लोक का काव्यानुवाद इस तरह से किया है की तस्वीर साफ भी हो गयी और कोई मुश्किल भी नही हुई ।

अनवर जलालपुरी ने न सिर्फ वास्तविक संस्कृत के श्लोकों का बहुत ही सुन्दर अनुवाद किया बल्कि विषय की आत्मा को भी बाकी रखा है। यद्यपि ये न सिर्फ एक गीता का ऊर्दू अनुवाद है बल्कि बाकी गीता के ऊर्दू अनुवादों में सर्वश्रेष्ठ और उत्तम है ।

सन्दर्भ सूचि:

1. भागवत गीता, लेखक जगन्नाथ खुश्तर, प्रकाशन नवल किशोर प्रेस, 1881
2. श्रीमद् भागवत, मुन्शी नवल किशोर, प्रकाशन नवल किशोर प्रेस,1937
3. श्रीमद् भागवत, मुन्शी द्वारिका प्रसाद उफ़ुक़, नवल किशोर प्रेस, 1921
4. असरारे मारेफ़त, काजी मोहम्मद नय्यर सिद्दीकी, स्वयंसेवक प्रेस लाहौर, 1915
5. श्रीमद् भागवत का रहस्य, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, अनुवादक शान्ति नारायण, अमृत प्रेस लाहौर, 1928
6. भागवत गीता, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, अनुवादक शान्ति नारायण, अमृत प्रेस लाहौर, 1928
7. ज्ञान प्रकाश, मुन्शी नवल किशोर कनैह्या लाल उर्फ़ अल्खधारी, ज्ञानी प्रकाशन आगरा, 1843
8. भागवत गीता, मुन्शी देवी प्रसाद, राम प्रेस मेरठ, 1913